शिक्षक का नज़रिया : विद्यार्थी का मनोबल और सीखना

राजू पटेल

कभी-कभी विद्यालयों में यह देखने को मिलता है कि कुछ बच्चों का स्वभाव बिल्कुल अलग होता है। यह अनुभव एक ऐसी बच्ची के बारे में है जो कक्षा में चुप रहती थी। बतौर शिक्षक जब ऐसे बच्चे हमारे सामने आते हैं तो ज़ेहन में यह सवाल आता ही है कि क्या यह बच्चा या बच्ची बचपन से ही ऐसी है। और यदि ऐसा नहीं है तो वे कौन-से कारण हैं जिनकी वजह से बच्चे में ऐसा बदलाव आया?

विद्यालय में प्रवेश

मेरे लिए यह एक सुखद एहसास था जब मैंने पहली बार बतौर एक शिक्षक विद्यालय में प्रवेश किया। प्रथम दृष्टया विद्यालय का वातावरण मुझे अच्छा लगा। इस विद्यालय में लगभग 200 बच्चे और 7 शिक्षकों के अलावा कई बीएड इंटर्नशिप के साथी अपनी सेवाएँ दे रहे थे। विद्यालय के पहले दिन ही शिक्षक साथियों ने साझा किया कि पाँचवीं से आठवीं कक्षाओं में 30 बच्चे ऐसे हैं जिन्हें अभी हिन्दी पढ़ना और लिखना नहीं आता है। इस वजह से वह दूसरे विषयों को भी ठीक से नहीं समझ पाते हैं। शिक्षकों की बातों को समझते हुए मैंने दो स्तरों पर बच्चों के साथ काम करने की योजना बनाई। पहला, कक्षा के समय विषय से सम्बन्धित बातें होंगी, और दूसरा, अतिरिक्त समय में ज़रूरतमन्द बच्चों के साथ भाषा पर अलग से काम किया जाएगा।

बच्चों से पहचान

वह पाँचवीं कक्षा में मेरा पहला दिन था। मैंने अपना परिचय दिया और बच्चों से उनका परिचय बताने को कहा। सभी बच्चों ने अपना परिचय बड़ी सहजता के साथ दिया, लेकिन एक लड़की, जिसका नाम प्राची था, वह परिचय देते हुए कुछ असहज थी। दुबली, पतली और बिल्कुल मौन प्राची दूसरे लड़के और लड़कियों से बिल्कुल अलग दिखती थी। यह भी देखा कि जैसे ही मैंने प्राची को उसका परिचय बताने के लिए कहा, सारे बच्चे अचानक ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगे। मैं आश्चर्यचकित था कि आख़िर यह हँस क्यों रहे हैं। प्राची उदास चेहरे के साथ मुँह नीचे करके खड़ी थी। थोड़ा ठहरकर, दुबारा उससे उसका परिचय जानना चाहा, मगर अब भी वह बिल्कुल चुप थी। जितनी

> **मेरी नज़र में सभी बच्चे समान महत्त्व के थे, और सभी में सीखने-समझने की क्षमता का निर्माण करना मेरा पहला लक्ष्य था।**

चित्र 1 : पढ़ने का आनन्द और एक दूसरे का साथ

भी बार प्राची से उसका नाम जानने का प्रयास किया, उतनी ही बार दूसरे बच्चे हँसे। आख़िरकार, मैंने दूसरे बच्चों से पूछा, "क्या बात है, यह बोल क्यों नहीं रही और तुम सब क्यों हँस रहे हो?" जैसे ही बच्चों ने यह सुना, वे और ज़ोर से हँसने लगे। मैं भौचक होकर बच्चों को देख रहा था, और मन ही मन सोच रहा था कि कहीं मैंने कुछ ग़लत तो नहीं बोल दिया। इतने में अपनी हँसी रोकते हुए एक छात्रा ने कहा, "सर, यह बोलती है।" अब मैंने एक बार फिर प्राची की तरफ़ नज़रें कीं। मैंने देखा कि वह अभी भी उदास चेहरे के साथ मुँह नीचे किए खड़ी थी। मेरे विद्यालय के पहले दिन की पहली कक्षा ऐसी होगी, मैंने कल्पना भी नहीं की थी। पहले दिन की इस पहली कक्षा ने मुझे यह सोचने पर विवश किया कि आख़िर और क्या बेहतर किया जा सकता था। इस उधेड़बुन ने मुझे कुछ नया और रचनात्मक करने के लिए प्रेरित किया। दूसरे दिन मैंने बच्चों को पर्यावरण विषय का एक

पाठ पढ़ाना शुरू किया। पाठ पढ़ाते हुए कक्षा के हर बच्चे की गतिविधि व उनके स्तर को समझने का प्रयास किया। बच्चों से पाठ से सम्बन्धित सवाल भी किए ताकि यह जान सकूँ कि जो बता रहा हूँ उसे वह समझ भी पा रहे हैं या नहीं; या कहाँ तक समझ पा रहे हैं? लगभग सभी बच्चे बातचीत में शामिल हुए। लेकिन आज भी प्राची चुपचाप मुँह नीचे किए खड़ी रही, और बाक़ी के बच्चे उसे देखकर हँस रहे थे।

मैं पता नहीं कर पाया था कि प्राची को पढ़ना-लिखना आता है या नहीं। अगले दिन मैंने विशेष ज़रूरत वाले बच्चों की अलग से कक्षा लगाई। प्राची भी इन बच्चों में शामिल थी। मुझे लगा कि प्राची किताब नहीं पढ़ पाती है, लिख नहीं पाती है, शायद इस कारण दूसरे बच्चे उस पर हँसते हैं। लेकिन मैं यह भी सोच रहा था कि बच्चों में इस बात को लेकर हँसने की प्रवृत्ति यूँ ही नहीं बनी होगी, कोई विशेष कारण अवश्य रहा होगा। इसकी पड़ताल हेतु मैंने प्राची व दूसरे बच्चों के व्यवहार और क्रियाकलापों को गहराई से समझना शुरू किया। मैंने ध्यान दिया कि लंच के समय, कक्षा के सभी बच्चों के बाहर जाने के बाद अन्त में, प्राची कक्षा से बाहर निकलती थी। अकेली। कुछ दिनों के बाद भी मुझे यह स्पष्ट नहीं हो पा रहा था कि दूसरे बच्चों ने प्राची को अकेले छोड़ दिया है या प्राची ने ख़ुद उन्हें।

प्राची, मैं और बाक़ी शिक्षक

प्राची की विद्यालय में बनी इस छवि के लिए प्राची ख़ुद ज़िम्मेदार थी या दूसरे बच्चे या कार्यरत शिक्षक साथी; या इसके पीछे सभी की सामूहिक भूमिका थी? यह एक विचारणीय प्रश्न था। मैंने प्राची के प्रति दूसरे बच्चों और शिक्षकों के दृष्टिकोण को भी समझने का प्रयास किया। बातचीत में सभी शिक्षकों ने कहा कि प्राची को न तो पढ़ना-लिखना आता है न ही वह कुछ समझती है, इसलिए पूछने पर कुछ बता भी नहीं पाती है। शिक्षकों की अनुमति से उनकी कक्षाओं का अवलोकन करके उनकी कक्षागत प्रक्रियाओं को भी समझने का प्रयास किया।

> मैंने पाया कि कक्षा में अध्यापन के दौरान शिक्षकों का ध्यान केवल उन्हीं विद्यार्थियों पर केन्द्रित होता था जो तुरन्त ही किसी प्रश्न का उत्तर दे देते थे या किताब पढ़ना अथवा लिखना जानते थे। प्राची शिक्षकों की नज़रों से औझल ही रहती थी। इसके परिणामस्वरूप प्राची ख़ुद को शिक्षक की नज़रों में उपेक्षित महसूस करने लगी थी।

यह भी महसूस किया कि जब कभी भी शिक्षकों द्वारा बच्चों से सवाल किया जाता था तब प्राची और उसके जैसी दूसरी छात्राओं का जवाब देना और न देना, दोनों ही शिक्षकों के लिए हँसी या क्रोध का कारण बनते थे, क्योंकि इनका जवाब शिक्षकों की अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं होता था। शिक्षक और बच्चे ऐसा व्यवहार करने के आदी हो गए थे। उन्हें इसमें कुछ भी ग़लत नहीं लगता था। शिक्षकों के ऐसे व्यवहार ने धीरे-धीरे प्राची को चुप्पी की ओर धकेल दिया था।

> प्राची के सन्दर्भ में शिक्षकों की तरफ़ से जान-बूझकर किसी नकारात्मक चीज़ को बढ़ावा देने का प्रयास नहीं किया गया था, लेकिन अप्रत्यक्ष रूप से ऐसा कुछ हो रहा था जिसकी अपेक्षा नहीं थी। एक शिक्षक के रूप में इन चीज़ों पर बारीक़ी से ध्यान न देने पर ऐसी समस्याएँ किसी के भी सामने आ सकती हैं, और हमें इस बात का भान तक भी नहीं हो ऐसा काफ़ी सम्भव है।

समय के साथ-साथ हम ऐसी प्रक्रियाओं के इतने अभ्यस्त हो जाते हैं कि हमें इनमें कोई ख़ामियाँ ही नज़र नहीं आती हैं।

की गई पहल

इन सारी बातों को जानने-समझने के पश्चात्, प्राची को अलग से समय देने और उसके साथ निरन्तर बातचीत करने का प्रयास शुरू किया। उसका विश्वास हासिल करने में मुझे लम्बे समय तक संघर्ष करना पड़ा। लंच के समय जब सभी बच्चे बाहर गेंद खेलते, प्राची कमरे के अन्दर अकेले गेंद से खेलती थी। मैंने उसके साथ गेंद खेलना शुरू किया। जब मैं उससे गेंद माँगता, वह मुझे दे देती और ख़ुद बैठ जाती। मैं जान-बूझकर गेंद उसके हाथ में न फेंककर इधर-उधर फेंक देता, और उससे गेंद लाने के लिए कहता ताकि इसी बहाने वह मुझसे बात करे। एक-दो दिनों तक वह शान्तिपूर्वक गेंद लाकर मुझे देती रही, लेकिन कुछ समय के बाद कहने लगी, "सर, आप तो गेंद सही से नहीं फेंक रहे हो!" यह सुनकर मुझे काफ़ी ख़ुशी हुई कि चलो, इसने कुछ बोला तो सही। धीरे-धीरे वह मुझसे बोलने लगी थी। कुछ और समय बीत जाने के बाद, वह मुझसे ज़्यादा सहज महसूस करने लगी। वह मेरी बातों और प्रश्नों को सुनकर उनका उत्तर देने का प्रयास करती थी। मैं किताब के प्रश्नों को उसके व्यावहारिक अनुभव और सन्दर्भ के साथ जोड़कर पूछता ताकि वह सहज महसूस कर सके, और कुछ बोल पाए। लेकिन दूसरे बच्चों के बीच में उससे कुछ पूछने पर वह चुप हो जाती थी। शायद उसे तब भी अपने-आप पर यक़ीन नहीं था कि वह सही उत्तर बता पाएगी। उसे लगता था कि अगर उत्तर ग़लत हुआ तो दूसरे बच्चे उस पर हँसेंगे। उसे उत्तर के ग़लत होने का उतना डर नहीं था जितना बच्चों के हँसने का था। मेरी बातचीत उसके साथ जारी रही। धीरे-धीरे वह बाक़ी बच्चों के हँसने के बाद भी अपनी बातों को रखने का प्रयास करती, और उसका यही विश्वास अब उसे हौसला देने लगा था। दूसरी तरफ़, अन्य बच्चों के साथ भी इस दिशा में निरन्तर बातचीत जारी रही। इसका परिणाम यह रहा कि समय के साथ दूसरे बच्चों ने भी प्राची की बातों को सुनना और उन्हें स्वीकार करना शुरू कर दिया। अब प्राची मौखिकतौर पर प्रश्नों का उत्तर देने लगी थी। कभी-कभी कोई ऐसा प्रश्न आता था जिसका उत्तर कक्षा के बाक़ी बच्चे नहीं दे पाते थे, प्राची उसका उत्तर दे पाती थी। कभी-कभी उसे चुप रहने के लिए भी कहना पड़ता ताकि दूसरे बच्चे भी जवाब दे पाएँ। उसका उदास चेहरा अब खिलने लगा था, और झुकी गर्दन ऊपर उठने लगी थी।

चित्र 2 : साथ मिलकर सीखते विद्यार्थी

चित्र 3 : खेल-खेल में सीखने को प्रोत्साहित करती शिक्षिका

चुनौती

इस पूरे प्रयास में एक नकारात्मक पक्ष भी था। जब मैंने प्राची और उस जैसी दूसरी छात्राओं को विशेष सहयोग देना शुरू किया तो कक्षा के बाक़ी बच्चों का व्यवहार मेरे और इन बच्चों के प्रति नकारात्मक होने लगा। उनकी शिकायत रहती कि मैं हमेशा प्राची को ही आगे रखता हूँ। कुछ बच्चों ने मुझसे बोलना और मेरे सवालों का जवाब देना भी बन्द कर दिया था। यह मेरे लिए एक और बड़ी समस्या थी। हालाँकि यह स्थिति बहुत लम्बे समय तक नहीं रही, लेकिन जब तक रही मेरे लिए एक बड़ी समस्या थी। इसका एक कारण शायद यह था कि मेरा ध्यान भी अन्य शिक्षकों की तरह कुछ विशेष बच्चों पर न रहकर बच्चों की ज़रूरत के अनुसार हो गया था जिसके कारण इन बच्चों को लगा होगा कि शायद उनकी प्राथमिकता समाप्त हो रही

> **“मैं किताब से जुड़े सवालों को उसके व्यावहारिक अनुभव और सन्दर्भ के साथ जोड़कर पूछता हूँ ताकि वह सहज महसूस कर सके, और कुछ बोल पाए।”**

है। हालाँकि मैंने बच्चों की समस्याओं और ज़रूरतों के अनुसार अपने ध्यान का प्रसार करने का प्रयास किया था। अर्थात्, मेरी नज़र में सभी बच्चे समान महत्त्व के थे, और सभी में सीखने-समझने की क्षमता का निर्माण करना मेरा पहला लक्ष्य था। ख़ैर, यह एक लम्बा प्रयास था, और जब तक मैं विद्यालय में रहा तब तक यह जारी रहा।

राजू पटेल जुलाई 2018 से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, प्रतापगढ़ (राजस्थान) में बतौर ब्लॉक कॉर्डिनेटर कार्यरत हैं। शैक्षिक विमर्श में प्रतिभाग करने और बाल साहित्य पढ़ने में उनकी विशेष रुचि है।

सम्पर्क : rajoo.patel@azimpremjifoundation.org